# Repayment of Public Debt

जिसप्रकार एक व्यक्ति अथवा संगठन से लिया हुआ ऋण लौटाना पड़ता है ठीक उसीप्रकार सरकार को भी न केवल सरकारी ऋण का ब्याज अपितु मूलधन भी अदा करना पड़ता है। बढ़ते हुए सरकारी ऋण केवल जनता पर करों का बोझ नहीं डालते बल्कि लोगों पर आर्थिक प्रभाव भी डालते हैं। अतः जितनी भी जल्दी ऋण अदा हो जाए उतना ही सरकार के लिए अच्छा होता है।

यदि सरकारी ऋणों का उपयोग उत्पादक कार्यों के लिए किया गया तो इसको भुगतान करना तत्काल जरूरी नहीं होता क्योंकि इस स्थिति में सरकार को ऋण का ब्याज अदा करने के लिए आय का एक स्त्रोत मिल गया होता है।

यदि सरकार ऋण का अधिकांश भाग अनुत्पादक कार्यों पर व्यय होता है तो जितनी जल्दी इसे अदा कर दिया जाए जनता के हित में उतना ही अच्छा होता है।

सरकार अपने ऋण का निपटारा करने के लिए निम्नलिखित तरीके अपनाती है —

## 1 ऋण नकार (Repudiation of Public Debt)

ऋण नकार का अर्थ है कि सरकार अपने दायित्वों को स्वीकार नहीं करती और ब्याज अथवा मूलधन दोनों ही के अदायगी से इंकार करती है। इन्कारी का अर्थ है ऋण को पूर्णतः चुकाया ही नहीं बल्कि उसे नष्ट करना भी है। 1917 में सोवियत सरकार तथा 1861-65 के गृहयुद्ध के पूर्व संयुक्त राज्य अमेरिका ने नागरिकों से लिए गए ऋणों की अदायगी से इन्कार कर दिया था। लेकिन सामान्यतः एक सरकार अपने

ऋणों की अदायगी से इंकार नहीं करती क्योंकि ऐसा करने से सरकार में सामान्य जनता का विश्वास समाप्त हो जाता है। फिर भी चरम परिस्थितियों में, कोई भी सरकार अपने आन्तरिक एवं बाह्य ऋण दायित्व से इंकार करने को बाध्य हो सकती है।

## 2 ऋण रूपान्तर (Conversion of Debt)

ऋण शोधन का एक अन्य तरीका ऋण की बदली का है। इसके अन्तर्गत एक पुराना ऋण नए ऋण में निर्गमित किया जाता है। हो सकता है कि जब सरकार ने ऋण लिया हो तो ब्याज की दर बहुत ऊंची हो। किन्तु जब ब्याज दर गिरी हुई होती है तो सरकार पुराने ऋणों को कम ब्याज वाले नये ऋणों में बदल देती है। ताकि राज्यों पर ऋण का भार न्यूनतम हो सके। इस क्रिया से ऋण का स्वरूप बदल जाता है।

किन्तु ऋणों की बदली का कार्य तभी होता है जब सरकार की साख अच्छा हो और उसके पास सामान्य से अधिक स्टॉक हो। डाल्टन ने ऋण रूपान्तर विधि की आलोचना करते हुए कहा है कि "यद्यपि इस विधि में वर्तमान ऋण भार कम हो जाता है तथापि भावी ऋण भार बढ़ जाता है। क्योंकि बाजारों में ऋणपत्रों के मूल्यों में वृद्धि हो जाती है। बाजार में ब्याज दर कम होने पर राज्य का ऋण भार और अधिक हो जाता है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति राजकीय पत्रों में विनियोग करना चाहता है।" इसलिए ऋण रूपान्तर की विधि को अपनाते समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान रखना होता है —

(1) मुद्रा की मांग तथा उनकी पूर्ति सुचारु रूप से हो

(ii) भविष्य में परिवर्तित होने वाले शुल्कों, कर, ब्याज की दरों का भी पूर्ण रूप से जानकारी हो
(iii) आवश्यकता पड़ने पर ही नये ऋणों के मूल्यांकन में वृद्धि की जाए।

3. क्रमानुसार बॉड भुगतान (Serial Bond Redemption)

सरकार यह निश्चय कर सकती है कि वह पहले जारी किए गए बॉण्डों का कुछ भाग प्रतिवर्ष अदा करती रहे। अतः ऐसी व्यवस्था की जा सकती है कि सरकारी ऋण का कुछ भाग प्रतिवर्ष परिपक्व हो जाया करे। इन बॉण्डो की क्रय संख्या के बारे में भी प्रारम्भ में ही निर्णय किया जा सकता है जो कि प्रतिवर्ष परिपक्व होंगे। इस पद्धति से ऋण का निश्चित भाग प्रतिवर्ष अदा कर दिया जाता है। इसप्रकार के ऋण शोधन की एक किस्म यह भी है कि प्रतिवर्ष परिपक्व होने वाले बॉण्डो की क्रय संख्या का निर्णय लॉटरी द्वारा निर्धारित कर लिया जाए। अमेरिका की स्थानीय सरकार इस विधि का प्रयोग करती है।

4. ऋण परिशोधन कोष (Sinking Fund)

ऋण परिशोधन कोष का सबसे पहले इंगलैण्ड ने अपनाया। उसके बाद विश्व के अन्य राष्ट्रों ने इसे अपनाया। शोधन निधि का अर्थ है एक ऐसी निधि का निर्माण जिसमें कि सरकारी आय का एक निश्चित भाग प्रतिवर्ष जमा किया जाता है और उस निधि से ऋणों का भुगतान किया जाता है। परन्तु शोधन निधि में धन का संचय उस समय तक होता रहता था जबतक कि ऋणों की अवधि पूर्ण न हो जाए। परन्तु आजकल इन निधियों से जैसे ही धन उपलब्ध